।। भर्म बिधुंस को अंग ।।
मारवाडी + हिन्दी
(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ भर्म बिधुंस को अंग लिखंते ||

|| कुंडल्यो ||

मन की ब्रम्हा सिव कहे || मन की क्हे औतार ||
मन की केहे सिकोत्री || क्हे अनसोया नार ||
क्हे अनसोया नार || पूंछ प्राक्रम सब सारा ||
आठ सिध्ध नौ निध || जके क्रता की लारा ||
सुखराम कहे केवळ नही || जां को क्हां बिचार ||
मन की ब्रम्हा सिव कहे || मन की कहे अवतार || १ ||

जो साधू कभी नही देखे हुये अनजाने नर नारी के मन की बात जाणता है वह साधू मोक्ष मे गया है व उसके शरण मे जाणेसे निश्चीतही मोक्ष मिलता है मोक्ष मिलनेमे कोई संदेह नही रहता । ऐसा जगत के नर नारी समजते है । इसपर आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,ब्रम्हा विष्णु महादेव शक्ती ये सभी हर किसीकी सबके ही मन की बात जाणते है । वैसे ही अवतार भी दूजे की मन की बात जाणते है । चौऱ्यांशी लक्ष योनीमे सिकोत्री पंछी है वह सिकोत्री पंछी संसार मे लाखो कोस दुर पे होनेवाली घटना देख लेती व नरनारी के मन की जाणती व अपने आवाज मे जगत को बताती । जिन्हे उसकी भाषा समजती वे वह क्या कह रही यह समज लेते है । ब्रम्हा के पुत्र अत्रीऋषी की पत्नी अनुसया यह भी दूजे के मन की बात जाणती थी इसलीये काम कपट लेकर आये हुये ससुर ब्रम्हा,विष्णु,महादेव के मन की बात जाणकर उन्हे उसने अपने सत के बलपर छः छः माहके बालक बना दिया व अपना पतिव्रत पण अखंण्डीत रखा तो ऐसे तीन लोक १४ भवन तक सभी पराक्रम व पहुँच अनेको मे है । होणकाल पारब्रम्ह तो अष्टसिध्द व नौ निध्द का उत्पती कर्ता है । ये सभी सिध्दाई या उसके पराक्रम से चलती है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,दुजेके मन का जाण लेना लाखो कोसोपे क्या हो रहा यह देखना अष्ट सिध्दी व नौ निध्दी से अनेक चरित्र चमत्कार करना इन विधीयोमे माया के सुख है केवल के सच्चे सुख नही है । इनमे केवल के सुख है यह समजना भ्रम है झुठी सोच है । इसकारण इन किसी भी विधीका शरणा लेनेसे मोक्ष नही मिलता । मोक्ष तो राम राम रटकर घटमे केवल प्रगट करने पे ही मिलता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे है । ||१||

छंद अर्ध भुंजगी ||

मिले राज पाटंग || मिले सुख खाटंग ||
मिले बुध भारी || मिले सुध सारी ||
मिले धन सोई || नग्र सेट होई ||
बिणा राम रटणा || सबे झूट कुवाई ||
मिले सुख सारा || सोई खाख माई ||२||

अष्टसिध्दी नऊ निध्दी साधने से राजपाट मिलकर राजपाट के अनेक सुख मिल जाते परंतु घटमे केवल नही उपजता । माया के ग्यान ध्यान सिखकर जगत के बुध्दी से उंची बुध्दी व समज बन जाती परंतु मोक्ष नही मिलता । रिध्दी सिध्दीयोकी सिध्दीया करनेसे बहुत धन प्राप्त हो जाता व उस भरपुर धनके कारण नगरशेठ भी बन जाते व मायाके बहुत सुख लुटेंगे परंतु घटमे केवल नही प्रगटेगा । केवल सिर्फ राम रटनेसे प्रगट होता केवल प्रगट हुये बिना मोक्ष नही मिलता मतलब आवागमन का दु:ख नही मिटता इसलीये माया की सभी विधीया मोक्ष पानेके लिये झुठी है भ्रम है । ये सारी विधीया चौऱ्यांशी लक्ष योनी नही छुड्वाती । इसलीये इन विधीयोसे प्राप्त हुये वे सर्व सुख शरीर छुटनेके बाद मिलनेवाले चौऱ्यांशी लक्ष योनी के लिये राख हुये रहते । ।।२।।

पढे बेद सोई ।। पडे पाँव लोई ।।
सबे देव सारा ।। मिले बारंम्बारा ।।
चले मन ताँही ।। ज्हाँ चल जाँही ।।
बिना राम रटणा ।। कदे मोख नाही ।।
मिले सुखसारा ।। सोई खाख माही ।।३।।

वेद पढ पढकर चारो वेद कष्ठस्थ करके प्रविण ज्ञानी बन जाता है । उस ज्ञानी को दंड्वत प्रणाम करनेके लिये जगतके ज्ञानी ध्यानी नर-नारी तुट पड्ते है उसे ज्ञानका भारी सुख मिलता है फिर भी केवल प्रगट नही हुवा इसलीये मोक्ष मे नही जाता है । तीन लोक १४ भवन के सभी देवी देवता बार-बार आकर मिलते है व साधना के जोरपर अपने मनको जहाँ लगे वहाँ चला जाता है परंतु इतना भी पराक्रम प्रगट कर लिया व राम नाम का रटन नही किया तो उसे मोक्ष नही मिलता । वह रामनाम रटन करेगा तो उसके घटमे केवल प्रगटेगा व फिर वह कभी गर्भमे नही आयेगा । राम नाम नही रटा तो उसके घटमे कभी केवल नही प्रगटेगा व बिना केवल ८४ लाख योनीमे पडेगा ही पडेगा व आज मिले हुये सर्व सुख ८४ लाख योनीमे राख बन जायेंगे । याने घटमे सब सुख है,धन है,अनाज है परंतु आग लगकर आगमे भस्म हो जाने पे वे सभी सुख धन अनाज राख हो जाते व उस राखसे सुख नही मिल पाते । इसप्रकार से ये सभी सुख आगे राख बन जाते । ।।३।।

गुणे ब्हो भाँती ।। करे मन खाँती ।।
कहे बात भारी ।। बडे तप धारी ।।
सुझे मन माँही ।। लाखाँ कोस ताँई ।।
बिना राम रटणा ।। कदे मोख नाँही ।।
मिले सुख सारा ।। सोऊ खाख माही ।।४।।

संसारके सभी भांती भांती प्रकार के उच्च व चतुर गुण प्राप्त करता । मन मे उच्च गुणोकी चतुराई रखता । संसार को चतुराई की भारी भारी बात बताता सहज सजेंगे नही

ऐसे बडे बडे तप करता । उसे उस तप के बलसे लाख कोस तक की बात मनमे दिखाई देने लगती । आदि भारी भारी अनेक पराक्रम प्राप्त करता व उनसे निपजे हुये अनेक सुख भोगता परंतु रामनाम कभी नही रटता । जिससे महासुखके मोक्ष मे कभी नही पहुँच पाता व चौरासी लाख योनीमे पड्कर कालके अनंत दु:ख भोगता । अनेक पराक्रम के पाये हुये सुख ८४ लाख योनीमे काम नही आते राख बन जाते । ।।४।।

म्हा रूप पाया ।। सबे लछ आया ।।
रमे पीव संगा ।। करे ख्याल चंगा ।।
दासी संग होई ।। चंपे पाव सोई ।।
बिना राम रटणा ।। कदे मोख नाई ।।
मिले सुख सारा ।। सोई साख माई ।।५।।

महा रुपवान काया मिली सभी पतीव्रताके उच्च लक्षण मिले । पतीके साथ अती प्रेमसे रमती व संसार की सभी क्रिडाये करती । चाकरी करनेके लिये अनेक दासीया है वे दासीयाँ हात पैर दबाती ऐसे अनेक सुख लेती परंतु रामनाम रटकर केवल नही मिलाती । केवल न प्राप्त करने कारण मोक्ष मे न जाते आवागमन मे पड्ती व आवागमन के दु:ख भोगती । इसप्रकार संसार के सभी सुख पाती परंतु रामनाम न रटणे कारण मोक्ष के सुख नही मिला पाती । ये पाये हुये सुख भी आगे नही चलते राख बन जाते । ।।५।।

गडे ऊड जाई ।। मनो बात पाई ।।
जळे काठ संगा ।। हुवे नाही भंगा ।।
चले नीर सोई ।। सिरे बाट होई ।।
बिना राम रटणा ।। कदे मोख नाही ।।
मिले सुख सारा ।। सोई खाख माही ।।६।।

सिध्दाई के बलपर जमीन मे गड्कर अनंत कोसोपे निकलता पंछी के समान आकाश मार्ग से उड जाता दुसरे के मन की बात समज जाता लकडीयोमे बैठकर खुद को अग्नी लगा देता परंतु सिध्दाई के जोरपर जरासा भी जलकर भंग नही होता । जमीन पे जगत चलता ऐसे पाणी पे आते जाते रहता ऐसे सभी भारी मायाकी सिध्दीया प्रगट करता परंतु मुखसे रामनाम कभी नही रटता । रामनाम न रटणे कारण घटमे केवल नही प्रगटता । केवल न प्रगटणे कारण मोक्ष के सुख मे नही पहुच पाता जन्म मरण के दु:ख भरे फेरे मे पडा रहता । प्राप्त की हुयी सभी सिध्दाईया सुख नही दे पाती । सुख देने के बेकाम हो जाती । ।।६।।

करे ब्होत सेवा ।। मिले आन देवा ।।
सजे जोग सोई ।। अखी जुग होई ।।
देवे सिष कूंची ।। चडे पवन ऊंची ।।

बिना राम रटणा ।। कदे मोख नाही ।।
मिले सुखसारा ।। सोऊ खाख माही ।।७।।

केवल राम की भक्ती छोड्कर अन्य देवताओकी बहुत भक्ती करता । उसके किये हुये देवताओके असाधारण भक्ती के कारण उसे देवता मिलने आते व करामात के अनेक सुख देते । कालसे बचनेके लिये सभी योग की साधना करता व कालसे क्षय नही होता ऐसा अक्षय हो जाता साथ मे अपने शिष्यो को भी अक्षय होनेकी कुंची देता । अपना व शिष्योका श्वास गिगन मे भृगुटीसे चढा देता व जुग जुग तक अखंडीत अमर रहता परंतु आगे काल के मुख मे ही जाता । इसने केवल राम का रटन किया होता तो वह सदा के लिये अमर हो जाता या कभी कालके मुखमे नही जाता था व मोक्ष देश के अनंत सुख भोगता था । ।।७।।

जबे काळ आवे ।। चडे गिगन जावे ।।
अेसी बिध पाई ।। सबे सिध आई ।।
सुणो सब कोई ।। नवो निध होई ।।
केहे सुखरामा ।। बिना सुण स्यामा ।।
ब्रथा बिना भक्ति ।। भेष गृह धामा ।।८।।

जब काल पकड्ने आता है तब श्वास चढाके काल नही पहुँचेगा ऐसे उंचाई पे भृगुटी मे जाकर बैठता है व रिध्दी सिध्दी की विधीयाँ करके आठो सिध्दीया व नौ निध्दीया पदम,महापदम, शंख,मकर,कच्छप,म्हकुंद,कुंद,नील,बच्ठा हासील कर लेता है । परंतु श्याम याने केवल की भक्ती नही करता इसलीये आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की श्याम याने केवल की भक्ती बिना जैसे गृहस्थी जीव चौरासी लाख योनीमे पड्ता वैसे ये सिध्दी भी आवागमन मे पड्कर दु:ख भोगता । ।।८।।

कवत ।।

हीण पुर्ष जत्त जारे ।। काछ सपने नही खुले ।।
तपसी या सम नाय ।। रूंख बागळ नित झूले ।।
त्यागी श्वान समान ।। जाण जग मे नही कोई ।।
भेड सरोवर अंग ।। फेर गरिबी नही होई ।।
मेना सम बोली नही ।। गुंगे समान नही मून ।।
बिन रटणा सुखराम के ।। मोख पहूंतो कूण ।।१।।

कुछ ग्यानी,ध्यानी सिध्द साधू जती बननेसे काल छुटेगा समजकर जती की कठीण साधना साधकर जती बनते इसपर आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,नपुसक का विर्य सपने मे भी नही छुटता अगर जती बननेसे मोक्ष मिलता यह समजते हो तो नपुसक यह कुद्रती ही जती है फिर वह मोक्ष मे क्यो नही जाता । कुछ ग्यानी ध्यानी साधु

सिध्द पेडपर उलटे लटक कर साधना करते व काल कटेगा व मोक्ष मिलेगा इस मे रहते तो आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है पेडपर उलटे लटकनेसे मोक्ष मिलता नही अगर मिलता रहता तो चमगादड पेडपर जन्मते ही उलटी लटकती फिर वह चमगादड मोक्ष मे क्यो नही जाती । कोई ग्यानी ध्यानी साध सिध्द मोक्ष मिलेगा करके हमेशा खडे रहकर तपस्या करते तो आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की ये पेड जन्मसे ही एक जगह सर निचे व पैर उपर करके खडे है फिर पेडोका मोक्ष क्यो नही होता । कई ग्यानी ध्यानी साध सिध्द समजते है की पुर्ण त्यागी बननेसे आवागमन मिटता तो आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की कुत्ते के समान त्यागी कोई नही है । वह रुपये पैसे कुछ नजदीक संग्रह नही करता यहाँतक की तनपे लंगोटी भी नही रखता । रोटी भी पेट से जादा उसके सामने डाल दी तो वह पेट भरे इतना खाता व पेट भरनेपे बाकी रही हुयी रोटी साथ न ले जाते जगह पर ही त्याग देता इसपे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,त्यागी बननेसे काल छुटता है तो कुत्तेका छुटेगा व आजदिन तक कुत्ता मोक्ष मे गया नही फिर त्यागी बननेवाले साधक मोक्ष मे कैसे जायेंगे व उनका काल कैसे छुटेगा । कई ग्यानी ध्यानी साधू सिध्दी गरीबीका स्वभाव प्रगट करते व मोक्ष प्राप्त होगा यह समझ बनाते इसपर आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,गरीबीका स्वभाव प्रगट करनेसे मोक्ष मिलता था तो भेड बकरी कुद्रतीही गरीब स्वभाव की है । इन भेड बकरी को किसीने काटा तो भी ये भेड बकरी विरोध नही करती गरीब बने रहती ऐसा कुद्रतीही गरीब स्वभाववाली भेड बकरी मोक्ष मे जाती नही फिर गरीब स्वभाववाला साधू मोक्ष मे कैसा जायेगा । कोई साधू समजते है की मिठी वाणी बोलणेसे मोक्ष मिलता है तो मैना तो जन्म से मरे तक मिठी ही वाणी बोलती है फिर वह मोक्ष मे क्यो नही जाती ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है । कोई साधू केवल प्रगट करने के लिये मौन धारण करते तो आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की गुंगा तो कुद्रतीही मौनी है फिर वह गुंगा मोक्ष मे क्यो नही जाता व ८४ लाख योनी मे क्यो दु:ख भोगते भटकता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,जती बननेसे,तपस्वी बननेसे,त्यागी बननेसे,गरीबी रखनेसे,मिठी वाणी बोलनेसे व मौनी बननेसे मोक्ष मे पहुचेगा यह साधको का भ्रम है । मोक्ष मे सिर्फ राम रटनेसे ही पहुँचते आता अन्य किसी विधीसे पहुचते नही आता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । ।।१।।

जरणा जमी समान ।। रूंख सम सती न कोई ।।
दाता इंद्र समान ।। सिध पारस सम लोई ।।
पवन अेकू कार ।। बूत के सम नाय सियाणी ।।
लाख कोस की बात ।। बस्त सिकोत्री जाणी ।।
अे अंग लछ मत पूँतीया ।। फिर ब्हो तामे होय ।।

बिन रटणा सुखराम के ।। मोख न पूंचे कोय ।।२।।

कोई साधू समजता है की,जरणा याने सहनशीलता स्वभाव प्राप्त कर लेनेसे मोक्ष मिल जाता तो आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की जमीन मे कुद्रती ही सहनशीलता स्वभाव है (जैसे नदी गंगा यह एक हंस का देह है जिसके देह का नाम गंगा है वैसे ही जमीन भी एक हंस का देह है । अगर जरणा पानेसे हंस मोक्ष मे जाता तो आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,जमीन भी मोक्षमे जायेगी । वह मोक्ष मे क्यु नही जाती । कोई ग्यानी समझते है की सती बननेसे मोक्ष मिलता है(सती याने ---- मांगे उसे वह देता)तो आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,पेड यह कुद्रतीही सती है । पेड के फल लो,फुल लो,पत्ते लो,ड्हलीयॉ लो,साल लो,लकडी लो,मुलीयाँ लो मतलब उसके देहका कोई भी अंग लो वह अंग दे देता, मना नही करता ऐसा कुद्रती सती है । फिर पेड मोक्ष मे जाता क्या? अगर पेड मोक्ष मे नही जाता तो सती बननेवाले सती पुरुष मोक्ष मे कैसे जायेंगे । कोई ग्यानी,ध्यानी,नरनारी समजते की दाता बननेसे मोक्ष पहुँचते आता तो आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,इंद्र के समान जगत मे कौन दाता है । यह इंद्र सभी को पिनेके लिये तथा अनाज उपजाने के लिये पाणी पुराता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,दाता बननेसे मोक्ष मिलता तो इंद्र मोक्ष मे क्यु नही पहुँचता । कोई ग्यानी ध्यानी साधू सिध्द समजते है की सिध्दी पुरुष बन जानेसे मोक्ष मिलता है तो आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,पारस लोहे का किमती सोना बना देता है व दरिद्रीकी दु:ख दरिद्री सदा के लिये नष्ट कर देता है । मतलब पारस यह कुद्रती ही सिध्द है । सिध्दी पुरुष होनेसे मोक्ष पहुँचता तो पारस मोक्ष मे क्यो नही जाता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज पुछ्ते है । कोई साधक समजते की,सभी मे एक जैसा बरतने से मतलब समभाव आनेसे जीव मोक्षसे पहुँचता तो आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,वायु सभी मे एकोकार याने एक सरीखा बरतता फिर वायु मोक्ष मे क्यो नही पहुँचता । कोई समजते है की सयाना बननेसे मतलब कोई निंदा करे,कोई पुजा करे,कोई नुकसान पहुँचाये तो भी नाराजी न लाते खुष रहना ऐसा स्वभाव आनेसे मोक्ष मिलता तो आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले मुर्ती के जैसा कौन सयाना है । मुर्ती की पुजा करो,निंदा करो,नुकसान करो कभी क्रोधीत होकर बोलती नही । फिर मुर्ती मोक्षमे क्यो नही पहुँचती । कोई ग्यानी ध्यानी समजते की लाख कोस का डाव समजनेका अवधीज्ञान प्राप्त करनेसे मोक्ष मिलता तो सिकोत्री पंछी को लाख कोस की बात कुद्रती दिखाई देती फिर सिकोत्री पंछी मोक्ष मे क्यो नही जाती?इसप्रकार के स्वभाव लक्षण व मत प्राप्त करनेसे मोक्ष मिलते रहता तो इस प्रकारके अनेक स्वभाव प्राणीयो मे कुद्रती है फिर चौऱ्यांशी लाख योनीके प्राणी मोक्ष मे क्यो नही जाते?आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,प्राणी सिर्फ राम नाम रटने से ही मोक्ष मे जाता ।

जरणा,सती,दाता,सिध्द,समभाव(समान बरतना)शाना बनके रहना लाख कोस की बात सुनना आदि स्वभावसे कभी भी मोक्ष मे नही जाता । इन स्वभावसे मोक्षमे जाता यह समजना यह भारी भ्रम है । ।।२।।

बनमे बास न चीत ।। रोझ हिर्ण्या नित होई ।।
मुसो गुफा बणाय ।। सिंह संग रहे न कोई ।।
ओऊं घट घट जाण ।। भेष टिल्ली ब्हो कीना ।।
निर्मोही नागण होय ।। भंवर बागाँ चित्त दीना ।।
अलमस्ता ईजगर रहे ।। अे लछ ब्होता होय ।।
बिन रटणा सुखराम के ।। मोख न पूंचे कोय ।।३।।

कोई ग्यानी ध्यानी नर नारी समजते है की बनमे बास करनेवाले मोक्ष मे पहुँचते तो आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,बनमे रोही हरीण समान अनेक प्राणी बास करते है फिर ये प्राणी मोक्ष क्यो नही पहुँचते । कोई साधू कहते है की गुंफा मे रहनेसे मोक्ष मे पहुचता तो चुहा यह हमेशा गुंफा मे ही रहता । फिर चुहा मोक्ष मे क्यो नही पहुचता । कोई कहते है की साधू को अकेले घुमनेसे केवल उपजता तो आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज पुछ्ते है की सिंह यह अकेला घुमता किसी को भी साथमे नही रखता फिर सिंह मोक्ष मे क्यो नही पहुचता । कोई ग्यानी ध्यानी कहते है की ओअम की साधना साधनेसे मोक्ष मिलता तो आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की सांस यह ओअम् सोहम् अजप्पा का बना है इसलिये जो जो प्राणी सांस लेता उन सभी प्राणीयोमे ओअम कुद्रती ही लिये जाता । फिर ये प्राणी मोक्ष मे क्यो नही पहुचते?जब ये प्राणी मोक्ष मे नही पहुँच सकते तो ओअम का साधक मोक्ष कैसे पहुँचेगा । कोई ग्यानी ध्यानी कहते है की शरीर पर टिलक लगाकर साधूका बार बार अलग अलग भेष बनाने से मोक्ष मिलता तो आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की गिलहरी के उपर कुद्रती व पानीसे न निकलनेवाले पक्के टिल्ले लगे रहते व वह बार बार अपना भेष भी बदलता फिर गिलहारी मोक्ष मे क्यो नही जाती? कोई ग्यानी ध्यानी समजते है की साधक ने निर्मोही बननेसे मोक्ष मिलता तो नागीण खुदके जन्म दिये हुये बच्चे खा जाती फिर नागीण मोक्ष मे क्यो नही जाती ऐसे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज पुछ रहे है । कोई समजते है की मोक्ष बाग बगीचा मे रमनेसे मिलता तो भंवरा चितमन से बाग बगीचा मे ही रातदिन रमता । फिर भवरा मोक्ष मे क्यो नही जाता कोई समजते है की अलमस्त रहनेसे काल छुट जाता तो अजगर कुद्रतीही अलमस्त जीता । अजगर अपना भक्ष खोजनेके लिये कही नही जाता व पासमे आया हुवा भक्ष भी अपने आप मुहमे आये बिना खाता नही तो अजगर जैसा अलमस्त कौन है?अलमस्त से कल्याण होता तो अजगर का हो जाता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की ये लक्षण तो और भी प्राणीयोमे है । इन लक्षणोसे कोई

भी मोक्ष मे नही जाता मोक्ष तो सिर्फ राम राम रटनेसे जाता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । ।।३।।

त्रक फ्रक गृह त्याग ।। मद गरिबी बक मूनी ।।
जंगळ रोही गाँव ।। बास क्याँही दिस सुनि ।।
कायर सूरा ब्हेस ।। बाद ठंडा ब्हो होई ।।
दाता मूंजी ग्यान ।। मुढ मुरख नर लोई ।।
लख चोरांसी जूण मे ।। सबे लछ मत्त होय ।।
बिन रटणा सुखराम के ।। मोख न पूंचे कोय ।।४।।

संसार से तरक फरक हो गये याने बिना सोचे समझे क्रोध मे आकर संसार त्यागनेवाले ऐसे बहुत है । सोच समजसे अच्छा गृहस्थी जिवन जीनेवाले गृहस्थी भी बहुत है व वेद का वैराग्य ज्ञान के समजसे गृहस्थ जिवन त्यागकर बने हुये त्यागी भी बहुत है । मद मे आकर उन्मत हुये भी बहुत है । व्यवहार मे सिधे साधे गरीब भी बहुत है । अति बोलणेवाले भी बहुत है नही के समान बोलनेवाले मौनी भी बहुत है । जंगल बनमे रहनेवाले बहुत है । भरे बस्तीमे रहनेवाले बहुत है । जहॉ परिंदा भी नही भटकता ऐसे सुनी जगह पे भी रहते बहुत है । लडाई मे डरकर भागनेवाले डरपोक याने कायर स्वभाव के बहुत है । शुरवीर भी बहुत है । वाद विवाद करनेवाले बहुत है व कैसे भी विवाद हो उसमे शान्त रहनेवाले भी बहुत है । संसारमे दान देनेवाले दातार बहुत है तो धन होनेके बाद भी खुदके लिये व खुदके घरके लिये जरासा भी धन न खर्चा करनेवाले बहुत है । संसार मे चतुर ज्ञानी बहुत है तो मुढमुर्ख भी बहुत है । जगत मे ऐसे अनेक स्वभाव व मतके नरनारी है । इन स्वभाव से जीव मोक्ष मे जाता तो आज सभी मोक्ष मे गये होते । तीन लोक चौदा भवन मे कोई नही दिखता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,मोक्ष मे तो जो मनुष्य राम राम रटन करेगा वही जायेगा अन्य कोई कैसे भी स्वभावका हो मतलब उच्च स्वभाववाला हो या निच स्वभाववाला हो मोक्ष मे नही जाते । ।।४।।

।। इति भ्रम बिधुंसन को अंग संपूरण ।।